हवेली

written by

pragati gupta

"आज रात फिर वही सपना आया.. माँ, क्या मतलब है इस सपने का ? आपको पता है क्या माँ? कोई राज हो या कुछ घटित हुआ हो मेरे साथ बचपन में" सुबोध ने डर, हैरानी और परेशानी के मिले जुले भाव वाला चेहरा बनाते हुए माँ से पूछा।

"नही बेटा, मैने तुझे जन्म दिया है, तू बचपन से मेरे पास रहा है। मुझसे बेहतर तुझे कौन समझ सकता है। तेरे साथ ऐसा कुछ नही हुआ था।" सुबोध की माँ कांति देवी डरते-डरते परेषान होकर बडबडाते हुये बोली।

"माँ, फिर इस सपने का क्या मतलब है? और ये हर अमावस्या को हा क्यां आता हे?तुम ही बताओ।"

" बेटा हो सकता है तुझे किसी की नजर लगी हो, मेरे राजा बेटे को विदेश से जॉब का ऑफर आया हे ना माइक्रोमैक्स से? पडोसी जल भुन गये हांगे, और वो शमा जी लोग तो कुछ जादा हा चिडे हुये लगते हे आजकल , उन्हाका नजर लगी होगी .. इधर आ, मैं तेरी नजर उतार दे रही." सुबोध का और देखकर मुस्कुराते हुए माँ बोला

“क्या माँ! कितनी बारनजर उतारोगी? तुम तो बस अंधविष्वास वाली बात करती हो, तुम्हे तो कुछ भी बताना ही बेकार है। रहने दो, मैं खुद ही पता कर लूंगा!और माइक्रोमैक्स नहा माइक्रोसॉफ्ट से ऑफर आया हे माँ! ”

ये कहकर सुबोध गुस्से म जमीन परपैर पटकते हुए अपने कमरे का और चला जाता है।

-चार अमावस्या स बार बार यही सपना आ रहा है, आमतौर पर सपने रिपीट नहा हुआ करते, मामला बहुत जादा गंभीर लग रहा है, मुझे जल्दी हा कुछ हल निकालना पड़ेगा। वरना म पागल हो जाऊंगा, आवेष से बात करता हूँ शायद उसे कुछ पता हो, वो तो बचपन से मेरे साथ खेला–कूदा है।

देरा न करते हुये सुबोध आवेश को फोन लगाता है.

“ भाई यार तू कहा ह ?आज कल ।कहा दिनां से मिला नहां कल फ्री ह तो बता तेरे घर आता हूँ।“ घबराते-घबराते एक हा साँस म सुबोध आवेश से पूछता है।

“हा भाई, आजा, फ्री हा हूं।“ आवेश.जबाब देता ह।

सुबोध आफिस से निकल कर सीधे आवेश को मिलने जाता ह।

“यार, आवेश भाई, मुझे तुझसे कुछ पूछना ह।“ इधर- उधर देखते हुये हलका आवाज म सुबोध बोला.

“हा पूछ ना, क्या हुआ बड़ा परेशान दिख रहा हे, सब ठाक तो हे न ?” सुबोध के कंधे पर हाथ रख कर आवेश बड़े शांत स्वर म बोला।

“यार तू मेरे बचपन का दोस्त ह, हम साथ हा पले बढे ह.. क्या तुझे याद ह कि कभी बचपन म. मेरे साथ कुछ अजीब घटित हुआ हो?”

“नहां भाई ऐसा तो कुछ भी नहां है . तेरे साथ. ऐसा कुछ घटित हुआ था। पर बात क्या ह ये तो बता?”

“कुछ नहां भाई. चार अमावस्या से देख रहा हूँ । हर अमावस्या वहां हवेला दिखती ह सपने म, म तो तंग आ गया हूँ।“

“यार तू आज के इस मोडन ज़माने म भी न ये किस टाइप का बचकानी बातां म लगा हे .. हाहा हा! हॉरर फिल्मे जादा न देखा कर. अपने काम पर ध्यान दे, और सुना है तुझे विदेष जाने का मौका मिल रहा है। तू बस मन लगाकर काम कर.. ठीक है.” उसे समझाते हुए आवेश बोला..

“चल अब निकलता हूँ काफी रात हो गई है।” मामला गंभीर था , उसका बचपन का दोस्त भी उसे न समझ सका था तो उसे इस बात पर अधिक चचा करना सहा न लगा, परेशान

सुबोध घर के लिये वापिस निकलता है पर घर का रास्ता एक खौफनाक घाटी से होकर जाता है। सुबोध काफी लेट हो गया था। सुबोध उस घाटी से निकलता है कि जब ही उसकी गाड़ी के सामने एक परछाई आती है, सुबोध ब्रेक लगाता है और वो परछाई गायब हो जाती है, जब ही सुबोध को महसूस होता है जैसे गाड़ी के पीछे कोई बैठा है, सुबोध पीछे पलटकर देखता है तो चकित रह जाता है गाड़ी के पीछे एक सुन्दर सी लड़की बैठी है और देखते ही देखते वो गायब हो गई, ये दृष्य देखकर सुबोध के रोमटे खड़े हो गय उसने गाड़ी की स्पीड बढ़ाई और सीधा जाकर घर पर ही रोकी इस घटना का सुबोध पर गहर असर पड़ा।

वह काफी दिनों तक गहरे डर में पड़ा रहा उसे समझ नही आता कि आखिर वो थी कौन अगर कोई भूतनी और चुडैल थी तो वह तो बड़ी डरावनी और भयंकर होती है। ये तो बिल्कुल भिन्न थी। सुबोध इस सोच में काफी समय तक पड़ा रहता पर धीरे–धीरे वक्त के साथ वो सब भूल जाता है। एक दिन सुबोध का फोन बजता है फोन आवेष का था। यार सुबोध चल आज क्लब चलते है। आज रविवार भी है तू काफी वक्त से परेषान है, तेरा मूड भी सही हो जाएगा। हाँ ठीक है भाई सुबोध हामी भर देता है। और दोनों शाम के वक्त पहुँचते है। वहॉ जाकर दोनो खूब मजे करते है, नृत्य, संगीत आदि कार्यक्रम चलते है। आवेष किसी काम से चला जाता है और सुबोध को बिल जमा करने को बोल जाता है। सुबोध जब बिल जमा करने जाता है तो देखता है कि जेब में उसका पर्स नही है। वो हैरान हो जाता है कि पर्स तो जेब में ही डाला फिर गया कहाँ। वो पूरे में पर्स को देखता है पर पर्स कही नही मिलता, अब समस्या ये आ खड़ी थी कि बिल कैसे जमा किया जाए आवेष भी नही इस कारण वह चुपके से क्लव से निकलने की कोषिष करता है पर दुर्भाग्यपूर्ण क्लव के वैटर उसे देख लेते है और मैनेजर के पास ले जाते है। मैनेजर सुबोध को बिल जमा करने की बोलता है। सुबोध उन्हे बताता है कि उसका पर्स गिर गया है। जो बाद में पैसे जमा कर दूँगा पर मैनेजर नही मानता और कहता है कि "तुम जैसे लोगो को मैं बहुत अच्छी तरह समझता हूँ। पर्स के बहाने बनाते है और यहाँ अयासी करने आते है। मुझे मेरे पैसो से मतलब है वरना मैं पुलिस को फोन लगा दूँगा।" सुबोध के पास अब कोई चारा नहीं था वो अपनी सबसे प्रिय और कीमती घड़ी उन्हे देकर बोलता है कि आप अभी इसे रख लीजिए मै बाद मे पैसे जमा करके इसे वापिस ले जाऊगाँ। मैनेजर उस घड़ी को रख लेता है और सुबोध को जाने देता है। सुबोध घर जाकर सोचता है कि आखिर पर्स गया कहॉ उसने तो कहीं निकाला भी नही तो गिर कैसे सकता है। ये सारी घटना देखकर सुबोध की एक पल के लिए महसूस होता है कि शायद माँ सही कह रही है मुझे किसी की नजर लगी है। मै माँ से कहकर नजर उतरवा लेता हूँ। अगले दिन सुबोध जब जागता है तो देखता है कि उसकी घड़ी जो उसने क्लब के मैनेजर को दी थी वो टेबिल पर रखी है। सुबोध देखकर हैरान हो जाता है कि ये घड़ी यहा आई कैसे। वो अपने माँ–बाप से पूछता है कि शायद वो लाए हो पर उनमें से कोई भी घड़ी नही लाता था, सवाल था कि घड़ी यहॉ आई कैसे। इस सवाल गुत्थी सुलझने वो क्लब के मैनेजर के पास जाता है और पूछता है कि इस घड़ी को यहॉ से किसने छुड़ाया जिस पर मैनेजर जबाव देता है कि सुन्दर सी युवती इस घड़ी को छुड़ाकर ले गई थी। सुबोध समझ नही पाता है कि आखिर कौन सी युवती थी और उसका सुबोध से क्या नाता है।

सुबोध के मन मे सवालो की लाईन लगती जा रही थी पर उत्तर किसी भी प्रष्न का न था। आज सुबोध के ऑफिस में जरूरी और खास मीटिंग थी जिसके द्वारा सुबोध की प्रोमोषन और विदेष जाने का मौका मिलना था पर जल्दी–जल्दी में सुबोध मीटिंग की फाइल घर पर ही भूल जाता है, जिसकी वजह से उसकी बहुत बेइज्जती होती है ऑफिस में और वो डील भी निकल जाती है जो प्रोमोषन का एकमात्र सहारा था। सुबोध को गुस्सा आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा है उसके साथ और क्यू। एक दिन सुबोध अपने किसी दोस्त के मुख से पहाडी पर मंदिर का जिक्र सुनता है जहाँ सारी परेषानियॉ दूर हो

जाती है पर दिक्कत ये थी कि वो मंदिर रात के 1 से 4 खुलता था। और मंदिर का रास्ता एक भयंकर और खौफनाक जंगल से होकर जाता था। उस जंगल के बारे म कहा जाता था का वहां जंगला जानवरां से भी जादा जंगला जंतु रहते ह.. लेकिन वहाँ कैसे पहुँचा जाए जब रात के तीन घंटे सफर किया जाऐ जब ही उस मंदिर टाईम पर पहुँच सकते है और जंगल का रास्ता इतना घना है की उस पर गाड़ी निकाल कर जंगल पार करना तो नामुमकिन है.. अब तो हां पैदल जाना पड़ेगा। सुबोध काफी गहरी सोच में था कि मंदिर जाया जाए या नही? पर परेषानियो का हल चाहिए तो मंदिर तो जाना पडेगा। हिम्मत जुटाकर सुबोध किसी को बताए बिना मंदिर के लिए निकला जाता है रात के 11 बज रहे थे सुबोध ने आधा रास्ता तय कर लिया था पर अब ये क्या आगे का रास्ता बंद था, सुबोध चारो तरफ अपनी नजर घुमाता है सारे रास्ते बंद थे सुबोध भयभीत हो जाता है कि ये क्या जब ही आगे बढ़ा किसी के हॅसने की आवाजा गूँजती है पर कोई दिख्ता नही सुबोध खुद को किसी चीज में बंधा बंधा महसूस करता है और देखते ही देखते वो जंगल एक कोहरे में बदल जाता है। सुबोध समझ नहीं पाता कि वो किसकी गिरफ्त में है और किसने उसे कैद किया है। पर ये कोई भूत पिषाच नही सुबोध ये तो समझ गया था। जब ही वहाँ दो सैनिक आते है और सुबोध को पकड़कर कहीं ले जाने लगते है। जाते समय एक युवती सुबोध की मध्य अंगुली पर तलवार से वार करती है। सुबोध की अंगुली खून से लाल और सुबोध दर्द के मारे बेहाल था। सैनिक सुबोध को लेकर किसी अजीब सी जगह पहुँचते है जहाँ चारो तरफ आग की मसाले थी और सामने एक किसी देवता की बहुत बड़ी मूर्ति। सैनिक को रस्सी से लटका देते है और नीचे आग की मसाले जला देते है। सुबोध को लगता है कि अब उसका बचना न मुमकिन है। कुछ आदिवासी आकर हवन.और बलि का तैयारा करते ह।

सुबोध का बलि देने हा वाला होती ह कि अचानक वो मूर्ता से आवाज आती ह। मुरखो तुम जिसका बलि देने जा रहे हो। उसका मध्य अंगुला कटा ह, उसकी अंगुली कटा है और तुम सब पूर्णता जानते हो कि में पूर्ण स्वस्थ्य व्यक्ति की बलि स्वीकार करता हूँ। छोड़ दो इसे! वरना अभी सबका विनाश हो जायेगा!!

ये सुनकर आदिवासी सुबोध की हाथ की तरफ देखते है और पाते है कि सच में उसकी अंगुली काटी है। आदिवासियो के सैनिक सुबोध को वापिस जंगल में छोड़ आते ह, रात का तीसरा पहर ,सुनसान जंगल और अँधेरे म उस मंदिर का तरफ भागता

सुबोध मन ही मन उस युवती का धन्यवाद करता है जिसने सुबोध की अंगुली काटी थी, पर सुबोध के मन में से सवाल अब भी रहता है कि वो कौन युवती है जो हर मुसीबत के समय उसकी मदद करती है। सुबोध अब मंदिर पहुँचता है, मंदिर काली माँ का था. मंदिर में प्रवेश करते हा वो एक छोटे से दिए के प्रकाश म मंदिर के पुजारा को देखता है जमीन पर पालथी मार के ध्यानका मुद्रा म बैठा हुआ था, उसके तगड़े शरार पर गेरुए वस्त्र थे, और माथे पर चन्दन के लेप से बनी तीन लकार.. और पूरा सर लम्बी-लम्बी जटाओं से ऐसा भरा हुआ था जेसे सामने साक्षात् महादेव तपस्या म लान बैठे हो..

जेसे हा सुबोध अपना हाल बताने के लिये मुह खोलने का सोचता हे वैसे हा वो साधू से दिखने वाले पुजारा अपनी आँखे खोल कर जमीन से ध्यान का मुद्रा से उठ जाते हे ..

सुबोध सारी घटना बताता है। पुजारी अपनी ज्ञानविद्या और सिद्धी से पता करके बताते है " तुमने बड़े हा साहस का परिचय देकर इस भयंकर जंगल को पार करके मेरे पास पहुचे हो.. मे अब तुम्हे ऐसे हा वापस नहा भेज सकता, जानना चाहते हो तो लो जानो!

जो हवेली तुम्हे स्वप्न में दिखती है वो कलिंदा नामक गाँव में है. वही जाकर पता करो वहाँ तुम्हे कोई न कोई सुराग जरूर मिलेगा।" इतना कहकर वो पंडित फिर से ध्यान मुद्रा म बैठ जाते है.. सुबोध पण्डित के कहे मुताबिक कलिंदा के लिए निकल जाता है। लेकिन माग म बाधा बनी वो उफनती हुई नदी थमने का नाम नही ले रही जिसे पर करके हा कलिंदा पंहुचा जाता हे.. सुबोध अब परेशान होकर नदा का तीव्र बहाव देखने लग गया - अब आगे का रास्ता कैसे तय किया जाए? इस पुराने टूट चुके लकड़ी के पुल पर तो जान का खतरा है, उसने मन हा मन सोचा.. वो हताश होकर वहीं इंतजार करने लगा कि कब नदी थमे तो आगे का रास्ता तय करे। इंतजार करते करते दिन कब रात म बदल गया उसे तो जेसे कुछ होश हा न था, उसे बस अपने सवालोके जवाब चाहिये थे। परेशान सुबोध वापिस लौटने लगा जब ही अचानक वहाँ एक बुढ़ा सा दिखने वाला व्यक्ति आया और सुबोध से बोला "बेटा नदी की उफान का थमना तो मुष्किल है, पर अगर तुम कलिंदा जाना चाहते हो तो मेरे साथ चलो में तुम्हे देसरे रास्ते से ले जाऊँगा! सुबोध सोच में पड़ गया और सर से ले के पाव तक उस बूढ़े आदमी का मुआइना करने लगा कि इन पर भरोसा किया जाए या नहीं .. उनकी हालात देखकर सुबोध को लगा कि वह कोई सज्जन व्यक्ति है। सुबोध ने उनकी बात मान ली और उन्हे अपनी मोटरसाईकिल में बैठा लिया, अब दोनो किसी दूसरे रास्ते से कलिंदा के लिए निकल गए। सुबोध के मन में आया कि क्यूं न इनके उस का रहस्य जाना जाये।

"काका मैं आपसे कलिंदा के बारे में कुछ पूछ सकता हूँ।" सुबोध ने हल्की आवाज में कहाँ.

" हा बेटा पूछो क्या बात हैं।"

" काका आप कलिंदा ही रहते है?"

" हा बेटा वहीं अकेला एक झोपड़ी में पड़ा रहता हूँ।"

" अकेले क्यू आपकी पत्नी और बच्चे नही है क्या।"

" सब थे बेटा."

" फिर क्या हुआ ? "

“काका बहुत लम्बी कहानी है, फिर कभी बताऊगां।?

“ अच्छा काका आप मुझे कलिंदा के वो हवेली के बारे में कुछ जानते है क्या।” “क्यू बेटा, तू क्यू उस हवेली के बारे में जानना चाहता है।”

“ बस ऐसे ही काका,”

“हा थोड़ा बहुत सुना है बेटा,”

“ क्या **सुना है काका आपने,** काका मुझे भी बताइये.”

“उस हवेली में राजा भूमिंदर की दो पत्नियॉ रहती थी, दोनो अति सुन्दर और समझदार थी एक का नाम अदिति था दूसरे का सदिति, दोनो सगी बहने थी, रूपा भूमिंदर भी अपनी दोनो रानियो से अति प्रेम करता था, पर किसी राजद्राही ने उन सब को जहर देकर मार डाला और उनकी पुत्री को भी। जब से सुनते है कि उन सब की आत्मा भटकती है। पर किसी महातपी के पराक्रम और शक्ति से राजा और रानी तो मुक्त हो **गया** पर उनकी बेटी आज भी वहीं हवेली में भटकती है। जो राजकुमारी रूपा के नाम से प्रसिद्ध है, उस हवेली में कोई नही जाता है। वहॉ जो भी जाता है लौटकर नहीं आता। अरे बेटा बातो ही बातो में हम कलिंदा पहुँच गए, यहाँ से सीधे मुड़ना तो तुम कलिंदा पहुँच जाओंगे, मुझे यही उतार दो.”

“ पर काका आप इस सुनसान जंगल में क्यू उतर रहे?”

“ बेटा वो सामने देख! मेरी झोपड़ी **है, मे** यही रहता हूँ ..और ये जो दीवार दिख रही है यह हवेली की पिछली दीवार से उसी के सहारे बनी झोपड़ी में मैं रहता हूँ।”

सुबोध के मन में कई प्रष्न थे पर वो चुप रहता है और काका को वही छोड़कर आगे कलिंदा की ओर बढ़ता है। सुन्दर से बगीचे के सामने वो डरावनी हवेली मानो चुडैल सी प्रतीत हो रही थी। सुबोध हवेली के सामने कुछ समय खड़े होकर सोचता है कि अगर यहाँ कोई राजकुमारी की आत्मा भटकती है तो वो मेरे पीछे क्यूं पड़ी है, मुझे क्यूं ये हवेली सपने में दिखती है। **वो** वहाँ के लोगो से हवेली के बारे में पूछताछ करता है, पर कोई सुबोध को हवेली का सच नही बताता, सब का कहना था कि हवेली का सच कोई नही जानता है..

लेकिन हैरान सुबोध **जब अपने दिमाग के घोड़े दौड़ता हे तो उसेउस बूढ़े आदमी का ख्याल आता हे जो उसे उस उफनती नदा के किनारे मिला था “ अरे वो** काका! उन्हे कैसे सब पता **है ?** जबकि उनकी उम्र से भी बड़े लोग है वेा भी नहीं जाते तो काका कैसे?

वो तुरंत हा उसी दिशा म अपनी गाड़ी घुमाता है जहाँ उसने काका को छोड़ा **था.** वहाँ पहुँचकर सुबोध **ने जो देखा उसे देखकर उसका आँख फटा का फटा रह गयी..**

" पेड़ , पौधे , जंगल और ये कच्ची सड़क, सब वहा तो हे.. फिर यहाँ वो झोपडी कहाँ गयी!?" सर पकड़ते हए उस वीराने म सुबोध अपनी पूरा ताकत से चिल्लाया ..

अगले आधे घंटे तक हर जगह देखने के बाद भी उसे वो झोपडी नहा मिला, अब उसका मन सोच में पड़ जाता है कि आखिर वो बूढा आदमी था कौन?

हैरान- परेशांन सुबोध हर संभव प्रयास करने के बाद भी उस झोपडी को ढूंड नहा पाया था , अंत म थक कर वो अपने घर वापिस लौट जाता है।

एक दिन सुबोध को रात में स्वप्न आता है कि कोई बाबा जो नदी के बीचो बीच आश्रम बनाकर रहते है उसे अपने पास बनाकर रहते है उसे अपने पास बुला रहे हैं। जब ही सुबोध की नींद खुल जाती है। सुबोध उठकर चौंक जाता है पहले तो वो सोचता है कि शायद भम्र है पर पता नही वो अपने लिये उस आश्रम के प्रति खिचाव महसूस करता है। "सुबोध, बेटा सुबोध!"

माँ आवाज लगाती है,

"हा माँ आया, बोलो क्या काम है?"

" बेटा मेरे कमरे में कपड़ो की पोटरी रखी है, ले आना.. काकी तो दे दू, बेचारी गरीब है. इनके बच्चे पहन लेगें।"

" हा माँ लाया।"

सुबोध अपनी माँ के कमरे में कपड़ो की पोटरी लेने चला जाता है। सुबोध कपड़ो की पोटरी लेकर मुड़ता है. कि सुबोध की नजर उस पोटरी के नीचे वाली पोटरी पर पड़ी..

सुबोध ने सोचा क्यू न जाकर देखा जाए। सुबोध जाकर पोटरी खोलता है तो उसमे सुबोध के बचपन के कपड़े रखे होते है, और एक छोटा सा डिब्बा जिसे खोलने पर उसमें से एक चाबी मिलती है।

"अरे ये तो, उस सन्दूक की चाबी है जो स्टोर रूम में पड़ा। माँ तो कहती है कि उसमें बेकार का सामान है, तो उसे इतना सम्भालकर क्यूं रखा है ?जाकर देखना चाहिए।"

सुबोध मन में सोचता बडबडाता है.

"सुबोध अभी तक कपड़े नहीं मिले तुमे?" माँ दुबारा एक जोरदार आवाज देती है।"

" हा माँ, मिल गए!" चिल्लाते हुये सुबोध बोला..

सुबोध माँ पोटरी देकर चाबी के साथ स्टोर रूम की ओर बढ़ जाता है।

"इस समय माँ भी काकी के साथ व्यस्त है, ये सहा समय है, जाकर देखना चाहिए कि उस सन्दूक में क्या है? "- उसने सोचा और दबे पावं चुपचाप घर के निचे बने स्टोररूम का सीडियां उतरने लगा । स्टोर रूम में जाकर जेसे हा वो सन्दूक खोलता है उसमे उसे कुछ रजाई गद्दे कम्बल और कुछ पुराना सामान मिला जो कूड़ा–कचरा लग रहा था.. तभो उसका नजर कागज का किसी

चीज़ पर पडी..एक लिफाफा जो कि पुराने बिस्तरो की आढ़ में दब**कर कुछ मटमैला सा हो गया था** । सुबोध उस लिफाफे को खोलता है, तो उसमे एक तस्वीर और एक **नक्सा** मिलता है। तस्वीर को जैसे ही मोड़ता है तो चौंक जाता है, ये तो उन बाबा की तस्वीर है जो मुझे सपने में दिखे इसका मतलब वो कोई बहम नही हकीकत है बाबा मुझे क्यूं बुला रहे है**?** और दूसरा कागज खोलने पर ये तो बाबा के आश्रम का बक्सा है, मुझे जाना चाहिए, मै आज ही निकलूंगा। पर उस सुनसान रास्ते में कैसे अकेला जाऊँगा, सुबोध मन नही मन सोचता है, सुबोध अकेला ही बाबा से मिलने निकल पड़ता है। नदी का रास्ता था इस वजह से सुबोध को रास्ते पैदल ही तय करना था। सुबोधा आगे बढ़ा जब ही चर्र–चर्र जैसे अजीब सी आबाजो ने सुबोध के कदम रोकने चाहे पर सुबोध साहस के साथ आागे बढ़ता रहा, उसके कानों में भी ये अजीब सी आवाजे सुनाई देकर उसे सोचने पर मजबूर कर रही थी। फड़ाक–भड़ाम जैसी आवाजो में एक बार फिर सुबोध का साहस तोड़ा सुबोध आगे बढ़ता उसके पहले ही एक पिषाच उसके सामने आकर खड़ा हो गया। अंगारा सी जलती लाल आँखे बड़े–बड़े दॉत और लम्बे और उल्टे पैर। सुबोध के होष उड़ गए। समझ नहीं आता कि क्या करे। सुबोध यहाँ–वहाँ देखता है पर उसे भागने का कोई मार्ग नही नजर आता। सुबोध को लगता है कि इस बार वो नही बचेगा। वो डर के मारे कॉपने लगना है और वो पिषाच जैसे ही उसके करीब आता है सुबोध अपनी आँखे बंद कर लेता है और गहरी मूर्छा में गिर जाता है। अगले पह**र** जब सुबोध को होष आता है तो खुद को एक आश्रम में पाता है मैं यहॉ कैसे वो सोच में पड़ जाता है। जब ही पीली धोती में एक शख्स आता है जिनके शरीर पर सिर्फ पीली धोती–कुर्ता था और हाथ में एक माला। जैसे ही सुबोध उन्हे देखता है **उनके** उपर सवाल वरसा देता है**,** कि मैं यहॉ कैसे आया**?** मुझे यहॉ कौन लाया**?**

“ वप्स, तुझे यहॉ में लेकर आया, तू मुझे बीच सड़क पर ऐसी अवस्था में मिला था तो तुम्हे अपनी कुटिया में ले लाया,”

पीली धोती वाले बाबा जबाव देते है। “पर मुझे निकलना है मुझे आलौकिक बाबा से मिलने जाना है। अगर आज नही पहुँचा तो शायद बहुत देर हो जाएगी।” सुबोध घबराकर उठता है और कुटिया के दरवाजे की ओर मुड़ता है।

“वत्स तुम्हे कहीं जाने की जरूरत नही है तुम सही जगह पर हो,”

“ मतलब मैं कुछ समझा नही” सुबोध **बोला.**

“मैं ही अलौकिक बाबा हूँ।”

(सुबोध ने सुनकर पहले तो यकीन नहीं करता)

“आप बाबा पर मैं कैसे मान लू कि आप ही अलौकिक बाबा है।”

“ वत्स तुम मुझे नहीं पहचान पाओगे। मै तुम्हे बताता हूँ। तुम यहाँ मुझसे उस हवेली की राजकुमारी का राज जानने आए हो न।”

“ जी महाराज,” सुबोध ये सुनकर बाबा के चरणों में गिर जाता है।

“बाबा आपको तो सब पता है तो आप ही बता दीजिए की क्या बात है।”

“ वत्स मैं सब बताऊँगा पर उसके पहले तुम्हे झील किनारे स्नान करना होगा। तुम पहले स्नान करकर ये पीले वस्त्र ग्रहण कर लो फिर मैं तुझे सारी कहानी बताऊँगा।”

सुबोध को सुनकर अजीब लगता है कि राज जानने के लिए स्नान करना जरूरी है क्या, पर विवष होकर वो स्नान करने चला जाता है। सुबोध स्नान करके वापिस आता है और बाबा के पास बैठकर उनसे अपने सवालो का जबाव मांगता है।

“बाबा मैं यहाँ यही जानने आया हूँ कि उस सपने का क्या मतलब है जो हर अमावस्या मुझे आता है। कौन है वो राजकुमारी और क्यो मेरे पीछे पड़ी है।”

“ बेटा इसके पीछे बहुत लमबी कहानी है। पर इतना समझ ले तू कि तेरी जान खतरे में है।”

“ बाबा पर मैने उसका क्या बिगाड़ा है वो मुझे मारना क्यूं चाहती है।”

“ नहीं बेटा वो तुझे मारना नहीं चाहती वो तुझसे विवाह करना चाहती है। बात उन दिनो की है जब तू 5 वर्ष का था। तेरी माँ–बाप को औलाद न थी और हवेली के पास वाले मंदिर के आर्षीवाद से तू उनकी झोली में आया। इस कारण तेरे पाँचवें जन्मदिन पर तेरे माँ–बाप तुझे लेकर उस मंदिर में भोज करवाने गए थे। भोज चल रहा था और तू खेलते–खेलते आपने माँ–बाप से ओझल होकर हवेली के दरवाजे पर पहुँच गया। तेरी मनमोहक छवि देखकर उस हवेली के राजा रानी ने तुझे अपनी शक्तियो से अंदर बुला लियाा उनकी राजकुमारी भी उस वक्त छोटी सी थी वो तुझ पर मोहिल हो गई। तू तीन दिन तक उनके कब्जे में रहा। सबने तेरी उम्मीद छोड़ दी थी बस एक तेरी माँ थी जो तेरी उम्मीद में मेरे पास आई और मैने अपनी शक्तियों से तुझे वहाँ से वापिस निकाला। राजा और रानियो को आत्मा से मुक्त हो गई पर राजकुमारी रूपा अभी भी बहीं भटकती है। और अगली माह की अमावस्या को वो तुझे अपने साथ लेने आयेगी और एक बार उसने तुझसे विवाह कर लिया तो उसे मुक्ति दिलाना नामुकिन हो जायेगा।” **बाबा ने बड़ी गंभीर सी भारा आवाज म कहा..**

‘”बाबा तो आप ही बताइये कि मैं क्या करूँ?” **डरते हुए सुबोध बोला.**

“‘बेटा इसका तो बस एक ही उपाय है तू उसके साथ चला जा.”

“ ‘बाबा आप ये क्या कर रहे है’। अरे बेटा चिंता मत कर तेरे साथ ऊपर वाले का आर्षीवाद है। ये ले कलावा ये कलावा बांधकर जाना मैं विवाह के वक्त वहाँ आऊँगा। अपनी दिव्य शक्तियों से उसे मुक्ति दिलाऊँगा।”

“ ठीक **है** बाबा” सुबोध बाबा का आर्षीवाद लेकर वापिस लौट जाता है। समय बीतता जाता है, और माह की अमावस्या करीब आती जा रही थी। सुबोध मन ही मन बहुत बैचेन था कि क्या होगा? वो बच भी पायेगा या नही? वक्त बीतता गया और अगले माह की अमावस्या भी आ गई, आधा दिन सुबोध की बैचेन में कट चुका था, हर पल इसी डर में था कि वो कब आएगी और कैसे उसे ले जायेगी। शाम के

चार बज रहे थे कि अचानक सुबोध को घर के बाहर गाड़ी का हार्न सुनाई देता है सुबोध अपने कमरे से झाँककर देखता है तो पाता है कि आवेष नीचे कार लेकर आया है। इतने मे में फोन की घंटी बजती है सुबोध चौककर देखता है तो अरे ये तो आवेष का नम्बर है, सुबोध फोन उठाता है। "यार भाई सुबोध कहाँ है, जल्दी आ मैं नीचे तेरा इंतजार कर रहा।" आवेष फोन पर बोलता है ..

सुबोध जल्दी से तैयार होकर नीचे पहुँचता है।

"चल कहीं घूमने चलते है बहुत वक्त से कहीं घूमा नही."आवेष सुबोध से बोलता है।

"नहीं भाई मेरेा मन नहीं है, तू जा मैं नही जा सकता." सुबोध उदास स्वर में जबाव देता है।

आवेस जिद करता है और जबरदस्ती सुबोध को बैठा कर ले जाता है। पर इस राज से वो अनजान था कि आवेष के वेष में उसे जो ले जा रहा है वो कोई और नही, राजकुमारी रूपा है। देखते देखते वो लोग कंलिदा की रोड़ पर पहुँच गए। "अरे! आवेश तू कहाँ ले जा रहा है मुझे." सुबोध घबराकर कहता है।

"वहीं जहाँ तेरी मंजिल है, और गाड़ी 90 की स्पीड में भगाकर सुबोध को हवेली म ले जाता है। अब सुबोध समझ जाता है कि ये कोई और नहीं राजकुमारी ही है। हवेली के सामने गाड़ी खड़ी करके राजकुमारी अपनी जादुई शक्तियों से सीधा हवेली में प्रवेष करती है और सुबोध को भी खींचकर ले जाती है। सुबोध घबराया हुआ समझ नहीं पाता कि अब क्या करे। हवेली में प्रवेष करते ही उसे कुछ धुंधली सी यादे फीकी पड़ती है। हवेली का साज श्रृंगार आज भी इतना आर्कषण और खूबसूरत था कि कोई उसे देखकर ये नही कह सकता कि यहाँ कोई आत्मा का बास होगा। सुबोध को रस्सीयो से बांधकर खूंटे से लटका दिया जाता है। सुबोध ने अब तक राजकुमारी रूपा को नही देखा था। वो चाहता था कि, उसे एक बार उसके असली रूप में देखा जाए। जब ही कुछ दासियाँ आती है और सुबोध छोड़कर राजकुमारी रूपा के शयनकक्ष में ले जाती है। शयनकक्ष पहुँचकर सुबोध जब रूपा को देख्ता है तो देखता रह जाता है। उसकी खूबसूरती इतनी गहरी थी कि अच्छे से अच्छा इंसान बहक जाए, वो लम्बे–लम्बे काले बाल, रंग रूप की 25 इंच की कमर और श्वेत रंग पर वो होंठो के नीचे काला तिल मानो कोई नूरू की परी जन्नत से उतर कर जमीन पर आई हो। रूपा सुबोध को बैइने का इषारा करती हैं और दसियो से बाहर जाने का इषारा करती है,

"सुबोध तू नही जानता मैं तुझसे कितनी मोहब्बत करती हूँ, तेरे लिए अब तक जिंदा हूँ, तू नहीं जानता तुझे मैने हर बार मौत के मुँह से बचाया है। वो पहली बार होटल में घड़ी.. दोबारा, उन आदिवासियो से तेरी अंगुली काटकर तुझे बचाया और उस भूखे दानव से भी। मैं तुझसे विवाह करना चाहती हूँ। तू बता चुपचाप मुझसे विवाह करेगा कि मैं जोर जबरदस्ती से करवाऊँ।" राजकुमारा ने बड़ी हा मनमोहक आवाज म कहा.

सुबोध राजकुमारी रूपा की बात सुनकर सोच में पड़ जाता है और हामी भर देता है विवाह के लिए। सारी तैयारियॉ करवाई जाती है, सुबोध को नए वस्त्र में तैयार जाता है और राजकुमारी रूपा विवाह के लिए दुल्हन के रूप में सजती संवरती है। विवाह की प्रकिया शुरू की जाती है। धीरे–धीरे विवाह सम्पन्न होने जा रहा था कि ,ये क्या! राजकुमारी रूपा वेहोष होकर जमीन पर गिर जाती ह. ये देखकर सुबोध

डर जाता है पर जब सामने देखता है तो पाता है कि अलौकिक बाबा खड़े है, वो सुबोध को यहॉ से भागने के लिए कहते है, अगर रूपा अपने असली रूप में आ गई तो वो सुबोध को छोड़ेगी नहीं, सुबोध अग्निकुण्ड छोड़कर निकलता ही है कि जब ही थोड़ी दूर भागकर वो खुद को कमरे में बंद पाता है। जब ही कमरे के दरवाजे पर एक आकृति आती है, अंगारो सी जलती लाल आँखे, बड़े–बड़े भयानक दॉत और उनसे लाल लहू सा टपक रहा था, बड़े–बड़े बाल विखार कर उसे और भयानक बना रहे है। सुबोध डर से थर–थर कॉप उठता है। और ऑखे बंद करता है कुछ समय पश्चात ऑखे खोलने पर देख्ता है कि आकृति जा चुकी हे। सुबोध वहाँ से भागने की कोषिष करता है पर ये क्या सुबोध तो काल कोठरी में फंसता जा रहा था। सुबोध जैसे–तैसे मुसीबतो से लड़ते हवेली के बाहर कदम रखत है कि अचानक जब ही हवा का एक जबरदस्त झोंका आया और दीपक को वापिस हवेली में उड़ा ले गया। उस पल लहू जमा देने वाले ठहाको से पूरी हवेली गूंज उठी हा....हा....हाा। यह हंसी किसी और की नही रूपा की थी। सुबोध समझ चुका था कि अब वो बहुत बड़ी मुसीबत में फंस चुका है और इससे बचना नामुमकिन है। और अब तो अलौकिक बाबा भी कहीं जान नही पड़ रहे थे। जब ही सुबोध की नजर रूपा के चुडैल साय पर पड़ती है।

“सुबोध, तूने बहुत गलत किया, मेरे साथ मैं तुझे नही छोडूगी! तूने मेरे साथ गद्दारी की, अब तू देख तेरे साथ मैं क्या करती हूँ।” इतना कहकर साया गायब हो जाता है।

सुबोध मन ही मन अलौकिक बाबा को याद कर रहा होता है, अब उनके अलावा सुबोध को कोई नही बचा सकता है, कि जब ही एक चमत्कार होता है। हवेली के दरवाजे अपने आप खुल जाते है, ये देखकर सुबोध प्रसन्न हो जाता है और बाहर खड़ी कार में बैठकर वहॉ से भागने की कोषिष करता है पर गाड़ी स्टार्ट नही हो रही थी, जैसे ही गाड़ी स्टार्ट हुई सुबोध ने गैर डाला और आगे बढ़ा दी मगर यह क्या कार वहॉ से आगे बढ़ने के बजाह वापिस हवेली की ओर मुड़ गई और वो भी तेज रफ्तार से सुबोध के हाथ में स्टेयरिंग तो था पर लग रहा था जैसे कोई अनजानी ताकत से कार वापिस हवेली की ओर मुड गई हो। भम–भडाक की जोरदार आवाज से सुबोध चीख पड़ता है और लहु–लुहान एवं बेहोष होकर वही गिर जाता है। कुछ समय पश्चात जब सुबोध की आँखे खुली तो उसने अपने आप को एक झोपड़ी में खटिया पर लेटे हुए पाया। इधर–उधर नजर दौड़ाई तो उसे एक आदमी की छवि दिखाई दी,

“अरे ये क्या ये तो काका है, वहीं काका जो पिछली बार कलिंदा आते वक्त सुबोध की कार में बैठकर आए थे।” **उसने मनहा मन सोचा.**

“ काका आप और मैं यहा कैस?”

“ बेटा पहचान गए तुम मुझे.?”

“ हॉ, काका आपको कैसे नही पहचाँनुगा, आप मेरे साथ कई वक्त गुजारे हो।”

“ हॉ बेटा, कल रात तुम मुझे हवेली के दरवाजे पर पड़े मिले तो मैं तुम्हे यहॉ ले आया, तुम उस हवेली मैं क्या कर रहे थे बेटा।”

सुबोध काका को अपनी कहानी सुनाता है कि उसके साथ क्या हुआ। इस पर काका बोलते है,

“हमे राजकुमारी रूपा जो कि अब चुडैल रूप में बदल चुकी है, उसे मुक्ती दिलाना होगा। हम पूरी तैयारियो के साथ हवेली जाएगे। “

“नही बाबा, आप जाइये, मैं वहॉ नही जाऊँगा बहुत खतरनाक है वो मुझे मार डालेगी, मुझे नही मरना।”

“ बेटा चिंता मत करो मैं हूँ न और हमे वहॉ, अलौकिक बाबा की मदद करने जाना होगा। उस चुडैल रूपा ने उन्हे अपनी अंदरूनित शक्तियों से कैद कर लिया है।”

इस पर सुबोध अकबकाकर बोलता है “क्या!? अलौकिक बाबा को कैद पर वो कितनी शक्तिषाली हैं?”

“ बेटा उस चुडैली ने उन पर अपने छल का प्रयोग किया है।”

“ ठीक है काका, तो फिर मैं चलता हूँ आपके साथ. अलौकिक बाबा ने मेरी मदद की है, अब मेरा वक्त है मैं उन्हे मुसीबत घड़ी में अकेले नहीं छोड़ सकता।”

दोनो पूर्ण तैयारियों के साथ हवेली में प्रवेष करते है, हवेली में प्रवेष करते है तो चौंक जाते है ये क्या राजकुमारी रूपा चुडैल का रूप छोड़ चुकी है। ऐसे में तो उसे मुक्त करना बहुत मुष्किल पड़ जाएगा। राजकुमारी को चुडैल के रूप में लाना बहुत जरूरी है। काका, सुबोध को कहते है कि उसके पास और कुछ पुरानी बाते याद दिलवाख ताकि रूपा को उन्हे याद करके गुस्सा आये, और वो गुस्सा से चुडैल के रूप में बदल ले, जब तक मैं इसे मुक्त करने का तरीका ढूढ़ता हूँ और हा एक बात और जैसे ही अपना रूप बदले इसे हवेली के पीछे वाले द्वार के बगल में बनी दीवार तक ले जाना ताकि मैं देख लूंगा। सुबोध बाबा के कहानुसार ही करता है वो राजकुमारी रूपा के पास जाता है। उसे देखते ही राजकुमारी रूपा की ऑखों में खून खोलने लगता है, सुबोध पहले तो डर जाता पर फिर साहस करके, रूपा के सामने उन पिछली बातो को खुरदने लगता है। सुबोध की बातें सुनकर रूपा का क्रोध बढ़ता है और वो धीरे–धीरे चुडैल में परिवर्तित होने लगती है। जैसे ही रूपा, चुडैल के रूप में बदलती है, सुबोध उसे अपने पीछे भगाकर हवेली के पीछे द्वार के पास बनी दीवार के पास ले जाता है। पर वो चुडैल दीवार के आगे नही बढ़ पाती है क्यूंकि काका ने वहॉ एक रेखा खींच रखी थी काका को देखकर, चुडैल कुछ बुदबुदाती है, तू फिर आया यहाँ, तू क्यूं अपनी जान के पीछे पड़ा है, रामेष्वर चला जा अभी भी वक्त है, मुझे बस सुबोध चाहिए, मेरी तुझसे कोई दुष्मनी नहीं काका, उसकी बकवास बात सुनते हैं और कुछ बड़बडाकर कोई मंत्र उसके ऊपर हाथ में लिया हुआ जल छिड़क देते है। जैसे ही चुडैल पर जल पड़ता है वो तड़प–तड़प कर नीचे गिर जाती है जब ही काका सुबोध को कहते है -“बेटा इसकी जान एक बोतल में कैद है और वो बोतल इसी स्थान पर कही है, जल्दी से हमे उस बोतल को ढूंढकर उसे जलाना होगा। वरना अगर वक्त रात के 12 बजे तक का पहुँच गया वो हम कुछ नही कर पायेंगे उल्टे हम ही मारे जाऐंगे, मैं जब तक इसे अपने मंत्र में कैद किये हूँ जब कि तू जल्दी से जल्दी बोतल ढूँढ़.”

सुबोध बोतल की तलाष में इधर–उधर घूमता पर इस खुले स्थानमें बोतल छिपी भी कहाँ होगी। सुबोध पूरी मेहनत लगा देता है पर बोतल कही नही मिलती और वक्त भी 11:30 पहुँच गया था रात का, इस अंधेरे में बोतल कैसे ढूंढी जाए ये सब चिंता सुबोध को परेषान कर रही थी। काफी देर ढूंढने के बाद अचानक पैर फिसलता है और वो गिरता है, पर जैसे ही वो गिरता है उसकी नजर पास में लगे पीपल के पेड़ पर पहुँचती है, वहाँ उस पेड़ की जड़ो में एक शीषी थी, सुबोध जल्दी से उठकर वो शीषी उठाता है। जब ही काका चिल्लाते है सुबोध जल्दी कर हमारे पास वक्त नही ह ैअब मैं और इसे अपनी कैद में नही रख सकता, सुबोध जल्दी से शीषी का ढक्कन खोलता है तो उसमे एक किसी पेन की नुक निकलती है। सुबोध देखकर हैरान हो जाता है कि ये क्या है और वो बोतल कहाँ है जिसमें चुड़ैल के प्राण है और इसी सोच, सुबोध को पता नही कि कब वो नोक उस शीषी के टरे पर घसिट जाती है। जैसे ही नोंक शीषी के टरे पर घसिटती है शीषी अपने पूर्ण रूप में बदल जाती है। जिसमे चुडैल के प्राण है, जब ही

काका की आवाज फिर दोहराती है सुबोध जल्दी, सुबोध उस बड़ी शीषी में कपड़ा लपेटकर उसको जमनी में फेंकता है और अपनी जेब से माचिस निकालता हैं कि जब ही वो चुडैल सुबोध के सीने पर सवार हो जाती है सुबोध पूरी शक्तियों से उसे अपने ऊपर से हटाने का प्रयास करता है पर वो नाकायाब रहात पास ही काका वहाँ आकर उस बोतल को जला देते है। जैसे ही बोतल में आग लगती है चुडैल जमनी पर आ गिरती है और राख बन जाती है। सुबोध पास में खड़ा ये सब देखता और काका से पूछता है -

"काका आपको ये सब कैसे पता?" काका जबाव देते है-

" जिसके प्राण को अभी मैने जलाया वो मेरी बेटी है... वर्षो से इसे मुक्त कराने की सोच रहा हूँ, पर आज में सफल हो पाया। अब मेरा भी वक्त हो गया है, मुझे जाना होगा और हा अलौकिक बाबा छूट चुके है, वो अपने आश्रम वापिस पहुँच गए है।" ये कहकर काका अपनी ऑखे बंद करते है और वहीं प्राण त्याग देते है। सुबोध अपने घर लौट जाता है और खुषी–खुषी अपना जीवन व्यतीत करता है। **कलिंदा का उस** हवेली में अब **किसी को** कोई डर नही..

कलिंदा की सारी औरते हवेली के मंदिर में पूजा करने आती है, और बच्चे हवेली में खेलने।